Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 3 | (July - September 2026)

हिन्दी के प्रमुख प्रयोगवादी काव्यों में युद्ध एवं शांति के संदर्भ

डॉ0 आरती देवराड़ी
प्रवक्ता हिन्दी, रा0इ0का0मरोड़ा, गैरसैण, जिला- चमोली (उत्तराखंड) पिन कोड- 246428

शोध सार-

हिंदी साहित्य की प्रयोगवादी काव्यधारा युद्ध और शांति की अवधारणाओं के बहुआयामी स्वरूप का विश्लेषण करती है। हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद स्वतंत्रता के बाद उभरने वाली वह काव्यधारा है, जिसमें कवियों ने पारंपरिक भावबोध, शिल्प और विषयवस्तु से हटकर आधुनिक मनुष्य की जटिल अनुभूतियों, आंतरिक संघर्षों तथा वैश्विक यथार्थ को अभिव्यक्त किया। युद्ध और शांति इस काव्यधारा में केवल राजनीतिक या ऐतिहासिक घटनाएँ न होकर मानव मन के आंतरिक संघर्ष, सामाजिक विघटन और अस्तित्वगत संकट के प्रतीक के रूप में उपस्थित हुई हैं। प्रयोगवादी कवियों हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र और धर्मवीर भारती ने युद्ध को बाहरी हिंसा से अधिक मानसिक तनाव, नैतिक पतन और मानवीय मूल्यों के क्षरण के रूप में चित्रित किया है। इनके काव्य में युद्ध आधुनिक सभ्यता की अमानवीय प्रवृत्तियों, सत्ता-संरचनाओं और वैचारिक टकराव का प्रतीक बनकर उभरता है। विशेष रूप में मुक्तिबोध के काव्य में युद्ध का स्वरूप सामाजिक अन्याय, वर्ग-संघर्ष और वैचारिक अराजकता के रूप में दिखाई देता है, जो मनुष्य को निरंतर आत्मसंघर्ष की स्थिति में डाल देता है; दूसरी ओर प्रयोगवादी काव्य में शांति की अवधारणा पारंपरिक आदर्शवाद से अलग हटकर आत्मिक संतुलन, चेतना, जागरूकता और नैतिक जिम्मेदारी से जुड़ी हुई जान पड़ती है। यह शांति बाह्य परिस्थितियों से अधिक मनुष्य के भीतर घटित होने वाली प्रक्रिया है। अज्ञेय के काव्य में शांति की अवधारणा स्वतंत्र चेतना और आत्म-अन्वेषण के माध्यम से अभिव्यक्त होती है, जबकि शमशेर के काव्य में यह संवेदनशीलता, मानवीय करुणा और सौंदर्यबोध के रूप में उपस्थित है। इस प्रकार प्रयोगवादी काव्य युद्ध और शांति की अवधारणा को द्वंद्वात्मक रूप में प्रस्तुत करता है; जहाँ युद्ध विघटन और संकट का बोध कराता है, वहीं शांति संभावित मुक्ति और मानवीय पुनर्निर्माण की आशा जगाती है। यह काव्यधारा आधुनिक वैश्विक परिदृश्य में मनुष्य की भूमिका, जिम्मेदारी और संवेदनहीनता पर गहन प्रश्न उठाती है।

बीजशब्द- संघर्ष, हिंसा, भय, विघटन, अमानवीयता, सामाजिक अन्याय, आत्मसंघर्ष, निराशा, आत्मबोध, मानवीय चेतना, करुणा, संवेदना, नैतिक जागरूकता, आत्मसंयम, आंतरिक शांति।

प्रस्तावना-

बीसवीं सदी का साहित्य तीव्र सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक परिवर्तनों की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ है। दो विश्वयुद्धों, औपनिवेशिक शोषण, स्वतंत्रता आंदोलनों तथा औद्योगीकरण के प्रभावों ने मानव जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। इन ऐतिहासिक परिस्थितियों ने साहित्य को केवल सौंदर्यपरक अभिव्यक्ति तक सीमित न रखकर उसे यथार्थ से जोड़ने का कार्य किया। हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद इसी यथार्थबोध और आत्मचेतना का सशक्त साहित्यिक आंदोलन है। प्रयोगवादी कविता पारंपरिक काव्य-रूढ़ियों का अतिक्रमण कर व्यक्ति की आंतरिक अनुभूतियों, मानसिक द्वंद्वों और अस्तित्वगत प्रश्नों को केंद्र में रखती है। इस काव्यधारा में युद्ध केवल बाह्य हिंसक संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि मानव मन के भीतर चल रहे तनाव, भय, असुरक्षा और विघटन के रूप में अभिव्यक्त होता है। युद्ध प्रयोगवादी कवियों के लिए सभ्यता के विघटन, मानवीय मूल्यों के ह्रास और सत्तालोलुपता का परिणाम है, जो व्यक्ति को भीतर तक तोड़

देता है। इसके विपरीत शांति की अवधारणा प्रयोगवादी कविता में किसी आदर्शवादी या घोषणात्मक संकल्पना के रूप में नहीं आती, बल्कि वह आत्मसंघर्ष के बाद प्राप्त होने वाली चेतन अवस्था के रूप में उभरती है। यह शांति बाहरी परिस्थितियों से अधिक मनुष्य की आंतरिक चेतना, नैतिक जिम्मेदारी और मानवीय करुणा से जुड़ी हुई है। प्रयोगवादी कवि युद्ध की विभीषिका के बीच शांति की आकांक्षा को व्यक्ति की आत्मिक मुक्ति और सामाजिक पुनर्निर्माण से जोड़ते हैं। अतः प्रयोगवादी कविता में युद्ध और शांति का संदर्भ केवल ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन नहीं है, बल्कि वह आधुनिक मनुष्य की त्रासदी, उसकी बेचैनी और शांति की खोज का गहन मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्रयोगवादी कविता में युद्ध की अवधारणा-

प्रयोगवादी कवियों के यहाँ युद्ध केवल देशों के बीच होने वाला सशस्त्र संघर्ष नहीं है, बल्कि व्यक्ति और समाज के बीच, चेतन और अवचेतन के बीच तथा नैतिक मूल्यों और अमानवीय व्यवस्था के बीच संघर्ष के रूप में प्रकट होता है। अज्ञेय के काव्य में युद्ध मानवीय अस्तित्व की विडंबना को उजागर करता है। वे युद्ध को सफल सभ्यता की विफलता मानते हैं; उनकी कविताओं में युद्ध के कारण उत्पन्न भय, अकेलापन और मूल्यहीनता स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं—

"समर भूमि की लाल धूल में बिखर गई वे आशाएं?

आया हूँ मैं पलट आज खो अपनी सब अभिलाषाएं।

मैं हूँ विजित, तिरस्कृत, घायल अंग हुए जाते हैं श्रांत

लौट किंतु आया हूँ घर को जाने किस आशा में भ्रांत।"[1]

अज्ञेय स्मारक, युद्धविराम आदि कविताएँ परमाणु युद्ध के नैतिक और मानवीय संकट को समझाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं।

मुक्तिबोध के काव्य में भी वैचारिक और आत्मिक संघर्ष का द्वंद्व है। उनकी प्रमुख कविताओं में युद्ध बाहर से अधिक आंतरिक और वैचारिक है। "मुक्तिबोध आत्ममंथन के कवि हैं। इस मंथन में कालकूट भी निकलता है और अमृत भी। कालकूट वह स्वयं पीते हैं और अमृत दूसरों को बांटते हैं। इस मंथन में उनका आत्मालोचन, सभ्यता, समीक्षा, आधुनिकता बोध, रचना प्रक्रिया, ये अभिप्राय, क्रांतिकारी परिवर्तन आदि सभी कुछ सम्मिलित थे।"[2]

शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में भी युद्ध एवं शांति के अनेक संदर्भ देखने को मिलते हैं। शमशेर बहादुर सिंह का रचनाकाल द्वितीय विश्वयुद्ध और भारतीय स्वतंत्रता के समय का है। वे प्रगतिशील धारा और मार्क्सवादी चेतना से प्रभावित थे; उनके भीतर सामाजिक न्याय और मानव-मुक्ति की गहरी आकांक्षा है। उनकी दृष्टि में युद्ध किसी राष्ट्र की समस्या नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए संकट है; वे साम्राज्यवाद और पूँजीवादी स्वार्थों को युद्ध का प्रमुख कारण मानते हैं। शमशेर के काव्य में युद्ध रक्तपात, मृत्यु और विनाश का प्रतीक है। वे युद्ध को पतन के रूप में देखते हैं। युद्ध के कारण उत्पन्न भय, विस्थापन और असुरक्षा की भावना उनके काव्य में स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी दृष्टि में युद्ध केवल रणभूमि तक सीमित नहीं रहता, वह घर-परिवार, समाज और संस्कृति को भी प्रभावित करता है और संपूर्ण जीवन को अस्त-व्यस्त कर देता है।

"जो धर्मों के अखाड़े हैं उन्हें लड़वा दिया जाए।

जरूरत क्या है कि हिंदुस्तान पर हमला किया जाए।

मुझे मालूम था पहले ही ये दिन गुल खिलाएंगे।

ये दंगे और धर्मों तक आखिर फैल जाएंगे।"[3]

युद्ध और हिंसा के बीच भी वे कोमल मानवीय अनुभूतियों की संभावना को तलाशते हैं। प्रयोगवादी कवियों के लिए युद्ध और शांति परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। युद्ध से उत्पन्न पीड़ा ही शांति की आवश्यकता को रेखांकित करती है। यह शांति आदर्शवादी नहीं, बल्कि संघर्ष से अर्जित चेतना का परिणाम है।

धर्मवीर भारती के काव्य में भी आधुनिक मानव की त्रासदी, संघर्ष और नैतिक चेतना का गहन चित्रण मिलता है। उनके यहाँ युद्ध केवल बाह्य हिंसा या राजनीतिक टकराव का रूप नहीं लेता, बल्कि यह मानव के भीतर चलने वाले द्वंद्व, सत्ता और नैतिकता के संघर्ष तथा सभ्यता की विडंबनाओं का प्रतीक बन जाता है। धर्मवीर भारती जी ने तो यहाँ तक इंगित कर दिया है कि अब नगर-समाज से आगे बढ़कर युद्ध की विभीषिका ग्राम्य समाज को भी प्रभावित करने लगी है। युद्ध के अच्छे तथा बुरे दोनों ही परिणाम होते हैं। युद्ध से एक पक्ष को जहाँ आंशिक लाभ होता है, वहीं दूसरे पक्ष को हानि होती है। प्रायः इतिहास में हुए युद्धों में हम देखते हैं कि युद्ध से मनुष्य से लेकर जीव-जंतु तक प्रभावित होते हैं। यह सच है कि युद्ध के समय देश-प्रेम, राष्ट्रीय भावना और एकता की लहर फैल जाती है, किंतु अनेक धारणाओं के बाद भी युद्ध को वांछनीय नहीं कहा जा सकता है। युद्ध सामाजिक विघटन की चरम स्थिति है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और समूची मानवीय सभ्यता के लिए युद्धोपरांत संतुलन बनाना एक कठिन चुनौती होती है।

"भीष्म ने कहा था,

गुरू द्रोण ने कहा था,

इसी अंतःपुर में

आकर श्रीकृष्ण ने कहा था– 'मर्यादा मत तोड़ो

तोड़ी हुई मर्यादा

कुचले हुए अजगर–सी

गुंजालिका में कौरव वंश को लपेटकर

सूखी लकड़ी–सा तोड़ डालेगी।'[4]

नरेश मेहता ने संशय की एक रात में युद्ध एवं शांति के प्रश्न पर बड़ा गहन चिंतन किया है। उनके यहाँ युद्ध सभ्यता की उस अवस्था का प्रतीक है, जहाँ मानव-मूल्य संकट में पड़ जाते हैं। युद्ध विनाश का ही नहीं, बल्कि आत्मग्लानि और आत्मसंघर्ष का रूप भी ले लेता है। उनके काव्य में युद्ध और शांति परस्पर विरोधी ही न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं; युद्ध चेतना को झकझोरता है और शांति उस चेतना की नैतिक परिणति है। उनके काव्य में युद्ध मानव इतिहास की अनिवार्य सच्चाई के रूप में उभरता है। नरेश मेहता के काव्य में युद्ध एवं शांति का गहन विश्लेषण मिलता है। मनुष्य-समाज एक ओर शांति का हितैषी है, तो दूसरी ओर पाशविक प्रवृत्तियों के कारण युद्ध जैसी आक्रामक स्थिति को भी जन्म देता है। यद्यपि वह जानता है कि युद्ध के उपरांत शांति स्थापित होना असंभव है—

"हनुमत वीर!

युद्ध की अनिवार्यता को जानता हूँ

अपने से अधिक

इस पृथुज्जन को मानता भी हूँ

किंतु इस युद्ध के उपरांत

होगी शांति

इसका तो नहीं विश्वास।"[5]

आधुनिक हिंदी कविता में नरेश मेहता का स्थान एक ऐसे कवि के रूप में है, जिसने परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य किया। स्वतंत्रता के बाद का भारतीय समाज राजनीतिक संघर्ष, सांस्कृतिक विघटन और मूल्य-संकट से गुजर रहा था। इस संदर्भ में नरेश मेहता का कार्य युद्ध और शांति को केवल वर्तमान की घटनाओं से ही नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के दीर्घ सांस्कृतिक अनुभव से जोड़कर देखता है। धर्म और अधर्म के बीच का संघर्ष, सत्ता और नैतिकता की टकराहट, सभ्यता के आत्मविनाश की चेतावनी के रूप में प्रकट होता है। महाभारत जैसे महाकाव्यात्मक संदर्भ में भी वे युद्ध को अनिवार्य, किंतु त्रासद घटना मानते हैं, जहाँ विजय से अधिक महत्त्व आत्मग्लानि और मूल्यबोध का होता है। नरेश मेहता मिथकीय कथाओं के माध्यम से यह स्पष्ट करते हैं कि युद्ध मानव इतिहास की अपरिहार्य सच्चाई है, किंतु शांति सभ्यता की दीर्घकालिक आकांक्षा है। उनका काव्य आधुनिक मानव के अतीत से संवाद कराकर भविष्य की दिशा सुझाता है। समाज युद्धों से नहीं सँवरता, किंतु युद्ध भी कभी-कभी दायित्व बन जाता है; संशय की एक रात में यही बताया गया है—

"किंतु युद्ध दायित्व है

किसी भी पीढ़ी के लिए दायित्व है

आवेश नही।"[6]

नरेश मेहता अपनी प्रसिद्ध कविता संशय की एक रात में राम के माध्यम से युद्ध और कर्तव्य की नैतिक समस्या को उठाते हैं। यह युद्ध कोई विजयोत्सव नहीं, बल्कि एक गहरी दुविधा है। राम युद्ध के निर्णय को केवल परंपरा और प्रतिशोध के आधार पर नहीं स्वीकारते, वे उसके नैतिक औचित्य पर विचार करते हैं।

इस प्रकार प्रयोगवादी कविता में युद्ध को महिमामंडित नहीं किया गया, बल्कि यह काव्यधारा युद्ध की वीभत्सता तथा उसमें सामाजिकता और नैतिकता के अभाव को उजागर करती है। युद्ध यहाँ केवल सीमाओं पर लड़ी जाने वाली लड़ाई नहीं, बल्कि मनुष्य की संवेदनाओं पर पड़ने वाला आघात भी है। इन कविताओं में बार-बार यह प्रश्न उठता है कि क्या किसी भी लक्ष्य के लिए हिंसा उचित है? प्रयोगवादी कवि सीधे युद्ध-विरोधी नारे नहीं देता, बल्कि टूटते मूल्यों, भंग होती मान्यताओं और व्यक्ति के भीतर की नैतिक उलझनों को सामने रखकर पाठकों को आत्मचिंतन की ओर ले जाता है। इस तरह प्रयोगवादी कविता का युद्ध दरअसल मानवीय अस्तित्व, स्वतंत्रता, अकेलापन और अर्थहीनता पर गहरे प्रश्न उठाता है और युद्ध को एक व्यापक मानवीय संकट के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करता है।

प्रयोगवादी काव्यों में शांति की संकल्पना- भवानी प्रसाद मिश्र की 'कालजयी' भी युद्ध एवं शांति के बीच द्वंद्व की विवेचनात्मक कृति है। कालजयी पर महात्मा गांधी के शांति एवं अहिंसा-संबंधी विचारों का प्रभाव है। कोई भी राष्ट्र तभी समुन्नत बनता है, जब उसका समाज श्रेष्ठ चिंतन से पूर्ण होता है। समाज की सुव्यवस्था के लिए युद्ध नहीं, बल्कि शांति चाहिए। भवानी प्रसाद मिश्र जी ने शांति को केवल युद्ध का अभाव ही नहीं, बल्कि मनुष्य की चेतना, करुणा और समरसता के रूप में प्रस्तुत किया है। राजनीतिक पक्ष का अवलंबन लेते हुए 'कालजयी' के रचनाकार बिंबिसार के पुत्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति को सामने रखकर लिखते हैं—

"थे मगधराज भयभीत

कि वे जब जायेंगे

तो ये चारों अपनी-अपनी पर आयेंगे,

कारण रण का तब

सिंहासन बन जायेगा

तब एक महाभारत फिर से ठन जायेगा"[7]

कवि ने बताया है कि युद्ध उन दिनों गौरवास्पद माने जाते थे, तथापि अशोक को कालजयी का नायक बनाकर उसे शांति का अग्रदूत माना गया है। तत्कालीन परिस्थितियों में अशोक ने वीर योद्धा की भूमिका में भी शांति का ही संदेश दिया। अपने पारिवारिक जीवन में माता-पिता के प्रति आदरभाव रखते हुए ऐसे चरित्र का निर्माण हुआ, जो इतिहास में अंकित हो गया। इस प्रकार भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में शांति आत्मचेतना, गांधीवादी नैतिकता, प्रकृति-प्रेम और सामाजिक न्याय का संयुक्त रूप है। यह चुप्पी या सन्नाटे का मुखौटा नहीं, बल्कि सत्य, प्रेम, संवाद और करुणा से अर्जित आंतरिक और बाह्य सामंजस्य है। उनकी कविताएँ पाठक को यह सोचने के लिए प्रेरित करती हैं कि शांति संघर्ष से भागने में नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों के आधार पर संघर्ष को नैतिक दिशा देने और जीवन को सरल और अस्तित्वपूर्ण बनाने में निहित है।

भारत भूषण अग्रवाल के काव्य में युद्ध का अर्थ केवल सैनिक संघर्ष या विश्वयुद्ध की विभीषिका नहीं है। वे आधुनिक जीवन की व्यवस्थाओं को ही एक प्रकार का निरंतर युद्ध मानते हैं। मानवीयता उनके काव्य में सर्वोपरि है। वे युद्ध को मानवता के लिए संकट तथा शांति को मानव-मूल्यों की पुनर्स्थापना के रूप में देखते हैं। उनकी दृष्टि में जब तक मनुष्य की गरिमा सुरक्षित नहीं, तब तक वास्तविक शांति संभव नहीं हो सकती है। कवि भारत भूषण अग्रवाल अपनी कविता"आने वालों से एक सवाल" कविता में शांति का महत्त्व बताते हुए लिखते हैं—

"बचपन में तुम्हें हिटलर और गाँधी की

कहानियाँ सुनाई जाएंगी

उस एक व्यक्ति की

जिसने अपने देशवासियों को मोह की नींद सुलाकर

सारे संसार में आग लगा दी

और जब लपटें उसके पास पहुंची

तो जिसने डर कर आत्महत्या कर ली

ताकि उनका मोह न टूटे,

और फिर उस व्यक्ति की

जिसने अपने देशवासियों को सोते से जगा कर

सारे संसार को शांति का रास्ता बताया

और जब संसार उसके चरणों पर झुक रहा था

तब जिसके देशवासी ने ही उसके प्राण ले लिए

कि कहीं सत्य की प्रतिष्ठा न हो जाए"।[8]

प्रयोगवादी कविता हिंदी साहित्य के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करती है। यह केवल शिल्पगत या भाषिक प्रयोगों तक सीमित आंदोलन नहीं था, वरन् अपने समय की गहरी ऐतिहासिक, सामाजिक और सैद्धांतिक हलचलों की अभिव्यक्ति भी थी। 1940 के दशक के वैश्विक और भारतीय परिदृश्य, द्वितीय विश्वयुद्ध, परमाणु विनाश, स्वतंत्रता संग्राम और विभाजन ने मनुष्य के आंतरिक स्तर को प्रभावित किया। दूसरी ओर प्रयोगवादी कविता में शांति की अवधारणा भी पारंपरिक अर्थों से भिन्न है। यहाँ शांति केवल युद्धविराम या राजनीतिक समझौता नहीं है, बल्कि आत्मसंतुलन, नैतिक पुनर्स्थापना और मानव-संवेदना की पुनर्खोज है। प्रयोगवादी कवि संघर्षों के बीच आंतरिक शांति की तलाश करते हैं। उनका मानना है कि जब तक इंसान अपने भीतर द्वंद्व और असुरक्षा को नहीं समझेगा, तब तक बाहरी शांति कायम नहीं हो सकती। इस प्रकार शांति का स्वर मानवतावाद, आत्मचिंतन और नैतिक सिद्धांतों का है। युद्ध और शांति प्रयोगवादी कविता में विरोधी नहीं हैं, बल्कि एक पक्ष के दो आयामों के रूप में दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य के प्रयोगवादी काव्य में युद्ध और शांति का चित्रण गहन दार्शनिक और मानवीय दृष्टि से हुआ है। युद्ध यहाँ हिंसा और विघटन का प्रतीक है, जबकि शांति आत्मबोध, नैतिक चेतना और मानव-मूल्यों की पुनर्स्थापना का संकेत देती है। प्रयोगवादी कवियों ने इन दोनों अवधारणाओं को व्यक्ति की आंतरिक अनुभूति से जोड़कर हिंदी काव्य को नई गहराई और आधुनिक दृष्टि प्रदान की।

अतः कहा जा सकता है कि प्रयोगवादी काव्य में युद्ध और शांति परस्पर विरुद्ध न होकर एक-दूसरे के पूरक तत्त्व हैं। युद्ध मानव जीवन की टूटन और संकट को उजागर करता है, जबकि शांति उसी संघर्ष से उत्पन्न मानवीय चेतना और नैतिक पुनर्स्थापना का संकेत देती है। इस दृष्टि से प्रयोगवादी काव्य आधुनिक युग की संवेदनशील और विवेकपूर्ण आवाज बनकर हिंदी साहित्य को गहरी दार्शनिक और मानवीय दृष्टि प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Hindikavita.com

2. सिंह बच्चन, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्णन् प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 430
3. सिंह शमशेर बहादुर,सुकून की तलाश, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 71
4. भारती धर्मवीर, अंधायुग, किताबमहल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 9
5. मेहता नरेश, संशय की एक रात, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या 66
6. मेहता नरेश, संशय की एक रात लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ संख्या 67
7. मिश्र भवानीप्रसाद, कालजयी, भारतीय साहित्य प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 17
8. Hindwi.org